ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

10-08-2026

मैं संगमयुगी ब्राह्मण हूँ यह व्यर्थ संकल्प, अपवित्रता के संस्कार शूद्र के संस्कार व स्वरूप है। ऐसा अनुभव हो कि यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं लेकिन शूद्रपन के हैं, उनको मेरा समझते हो तो माया के वश होकर परेशान होते हो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

I am a confluence-aged Brahmin. This is not a waste thought, sanskar of impurity or sanskar of a shudra. Experience the sanskars of impurity and forgetfulness not to be yours, not those of a Brahmin, but those of a shudra. When you consider those to be yours, you become distressed or influenced by Maya.